VOL- IX | ISSUE- V | MAY | 2022 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 7.331 | ISSN 2349-638x

डॉ. हरिशरण वर्मा का सृजन एवं सामयिक युगबोध

सुदेश, शोधार्थी (हिन्दी)
रवींद्रनाथ टैगोर वि.वि., भोपाल, म.प्र.

सारांश :

साहित्य में अनुभूति के साथ–साथ अनुभूति प्राप्त करने वाली परिस्थितियों का भी अपना महत्त्व होता है। इसलिए साहित्य में युगबोध की आवधारणा का अपना महत्त्व है। समसामियक सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक परिस्थितियों को युगबोध में षामिल किया जाता है। बिना युगबोध के साहित्य में कलात्मकता आना संभव नही होता, यह युगबोध यथार्थ और आदर्ष दोनों प्रकटन होने के साथ–साथ समरसतावाद की स्थापना भी करता है। डॉ. हरिषरण वर्मा सामाजिक नाटकों के रचयिता है और इनके नाटक समसामयिक युगबोध से पूर्णत संपृक्त हैं। सामयिक परिस्थितियों की अवधारणा में हरिषरण वर्मा के नाटक अधूत नही रहे हैं। यहाँ यह भी कहना संगत की युगीन परिस्थितियों का साहित्य से सीधा सम्बंध है और यही संबंध युगबोध की अवधारणा माना गया है। साहित्यकार स्वयं एक सामाजिक प्राणी होता है। युगीन परिस्थितियों में उसके साहित्य के साथ–साथ उसके जीवन और दर्षन को प्रभावित करती हैं। हरिषरण वर्मा इसका अपवाद नही हैं, उनके साहित्य की सार्थकता उनके युगीन परिस्थितियों के चित्रण और समाज में देखी जा सकती है। युगबोध की उपस्थिति का प्रतिफलन उनकी कृति 'लव जिहाद' और 'तीन तलाक' में देखी जा सकती है। 'लव जिहाद' और 'तीन तलाक' हिन्दू मुस्लिम की भातृभावना पर करारा तमाचा लगाने वाली समस्याओं के समाधान की ओर प्रकृत करता है।

कुंजी शब्द : व्यक्तित्व निर्माण, युगबोध, रचनाएं, युगबोध, समसामयिक, भविश्य, दृश्टि, प्रवृत, साहित्य रूप, अनुभूति, परिस्थितियाँ, समाज, नाटक नवजागरण, योगदान, प्रेम।

प्रस्तावना :

डॉ. हरिषरण वर्मा हिन्दी साहित्य में नाटक साहित्य में महत्त्वपूर्ण रचनाकार हैं। इनके नाटकों की सामाजिक जीवन के और समाज के समसामयिक संदर्भों को रूपायित ही नही करती बल्कि समाज में निहित समस्याओं की ओर पाठक का ध्यान आकर्शित करती है और पाठक के सामने उस समस्या का समाधान भी प्रस्तुत करती है।

युगबोध का अर्थ एवं आयाम :

युगबोध युग की मान्यताओं एवं परिस्थितियों के साथ भाशा और संस्कृति को भी साथ लेकर चलता है। षुक्ल जी का हिन्दी साहित्य का काल क्रम विभाजन इसी युगबोध की चेतना से अनुप्राणित था। कहना संगत होगा कि भक्तिकाल रीतिकाल से सर्वथा भिन्न है, रीतिकाल आधुनिक काल से सर्वथा भिन्न है और आदि काल का इन तीनों कोलों से कोई लेना–देना नही है। यहाँ स्पश्ट हो जाता है साहित्यकार सृजन समसामयिक संदर्भों से कलकर नही हो सकता। यह बात हरिषरण वर्मा के लिए महत्त्वपूर्ण है जितनी कि आचार्य रामचंद्र षुक्ल के लिए थी।

युगबोध की अवधारणा में तत्कालीन समाज और राश्ट्र की संपूर्ण परिस्थितियों को षामिल कर सापेक्ष अर्थ मं अध्ययन किया जाता है। इन परिस्थितियों में समाज की उपलब्धियों और विकास भी षामिल है। भारतीय सर्वोच्य न्यायालय को भारत के लिए 'तीन तलाक' पर

कानून पारित करना और उसी स्वरूप में लेखक हरिषरण वर्मा का नाटक 'तीन तलाक' का प्रकाषन होना इस बात की ओर संकेत करता है कि हरिषरण वर्मा का साहित्य युगीन परिस्थितियों का साहित्य है इसे युगबोध का साहित्य कहना संगत प्रतीत होता है।

युगीन समाज बोध, संस्कृति बोध, मूल्य बोध जीजिविशा बोध सब कुछ युगबोध में अध्ययन हेतु षामिल किया जाता है ओर इन सबकी साहित्य अध्ययन में अनुभूति के रूप में पढ़ा जा सकता है। डॉ. हुकुमचंद राजपाल लिखते है, ''युगबोध में वैयक्तिक मूल्यों के व्यापक अर्थ में ग्राह्य होने पर व्यक्ति का दायरा छोड़कर सामाजिक बन जाते है और इन्ही के कारण विकास होता है और इन्ही के कारण युग परिवर्तन।''[१] इसी प्रकार डॉ. कैलाष के षब्दों में कहा जा सकता है, ''युग विभिन्न परिस्थितियों में मूल्य निर्माण करता है और इन्ही मूल्यों के कारण वह अपने युग को जीवन षैली निर्धारित करता है।''[२]

वस्तुत कहा जा सकता है कि जीवन में साहित्यकार जिस समाज में रहता है जिसके साथ वह अंतर्क्रिया करता है वह उसके साहित्य का अंग बन जाना स्वाभाविक संदर्भो की व्याख्या है। यही युग बोध है, यही समसायिक समाज है और यही इसकी परिस्थिति है। यह युगबोध का अर्थ और उसके आयाम भी कहे जा सकते है हरिषरण वर्मा की साहित्य इन्ही युगबोध के आयामों का साहित्य है।

हरिशरण वर्मा एवं सामयिक युगबोध :

कहा जाता है कि जो व्यक्ति समय के साथ नही चलता वह कदापि सफल नही हो सकता। हरिषरण वर्मा इस बात को जानते थे और समय के साथ सभी सामयिक पहलुओं को अपने साहित्य में चित्रित किया है। यहाँ एक बात और कहना संगत होगा कि सामयकि परिस्थितियों को अपनाया ही नही चित्रित भी किया है। उदाहरण के लिए गृहलक्ष्मी का संदर्भ उदाहरण के लिए समझा जा सकता है। देखा जा सकता है कि एक परिवार किस प्रकार रिष्तों के अपनेपन न रहने के कारण विघटन की ओर जा रहा है।

आज जीवन में सामयिक परिस्थितियों का बहुत बड़ा योगदान है एक उदाहरण प्रस्तुत है, ''वहाँ पर लड़कियों की क्षमता से अधिक कार्य लिया जाता है, भरपेट खाना को दिया नही जाता और मैत्री वाली बात मैंने आपको बता ही दी।''[३] यह गैरसरकारी संगठन एन.जी.ओ. की सच्चाई का वर्णन सामयिक युग बोध की ओर संकेत करता है, यहाँ कहा जा सकता है कि एन.जी.ओ. की स्थापना समसायिक सामाजिक और षासकीय कूल के मध्य पुलों का कार्य करती है। आज सामयिक संदर्भों में मूल्यों की बड़ी कमी देखी जा सकती है, इन्हीं मूल्यों के पुश्ट करने के कार्य में हरिषरण वर्मा की लेखनी देखी जा सकती है। मूल्यों के सुधार के दृश्टिकोण से इनका नाट्य साहित्य सामाजिकता के दायरे में आ जाता है। आज समाज में नारी के विरूद्ध अपराधों का कारण सामयिक वैमनश्य है। इसकों समाप्त करने के लिए हरिषरण वर्मा लिखते है, ''मेरा मानना है कि सम्पूर्ण समाज की नारियाँ मेरी बेटी और बहन है। सामाजिक अव्यवस्था, गरीबी, लाचारी और समाज की वासनात्मक प्रवृति एक लड़की को, भोली भाली लड़की से वेष्या बना देती है।''[४] इस प्रकार समाज में स्वार्थ और मतलब का व्यवहार देखा जा सकता है यह सामयिकता की ओर संकेत करता है।

डॉ. हरिषरण वर्मा समाज के साहित्यकार है और से ही परिवार और राश्ट्र दोनों का विकास होता है। यही विकास मनुश्य को मनुश्य से दूरी बनाने की राह पर लेकर आता है, यही सामाजिक सामयिक संदर्भ है। 'गृहलक्षमी' नाटक से बड़ी इसके लिए और क्या मिसाल हो सकती

है जो हरिषरण वर्मा के नाटकों में और पाठकों के लिए एक मिसाल का काम करती है।

भारतीय समाज के गिरते नैतिक पतन और महिला अपराध की बानगी प्रस्तुत है, ''प्रत्येक समाज में प्रत्येक प्रकार के आदमी होते हैं, फिर तुम्हारे इस अनुपम सौंदर्य को देखकर कोई भी मोहित हो जाता है, फिर मैं तुम्हारे साथ हूँ तो चिंता की कोई बात, यह सत्य है कि मुझे तुम्हारा मद्दगार बनना चाहिए।''[५] यह उदाहरण नारी उत्थान का है जिसके माध्यम से लेखक समाज नारी को वासना की दृश्टि से नही, आदर की दृश्टि से देखने की बात कहता है।

किसी भी साहित्यकार के साहित्य की जीवंतता इसी में निहित होती है कि उसमें षाष्कत युगीन अभिव्यक्ति होती है। युगीन संदर्भों के बिना कोई भी रचना काल्पनिक सी प्रतीत होती है। गतिषीलता और गत्यात्मक का गुण किसी भी रचना में सामयिक युगबोध के संयोजन से होता है, हरिषरण वर्मा इस संयोजन में सफल प्रतीत होते हैं। नारी उत्थान का उदाहरण प्रस्तुत है, ''वहाँ लड़कियों को रात के अंधेरे में कार में बिठाकर, सारी–सारी रात के लिए, अधिकारियों, धनाढ़यों, नेताओं की कोठी पर भेजा जाता है, वही करवाने के लिए जिससे दुखी होकर वह इस आश्रय में आयी थी।''[६] इस प्रकार यह आज की नारी निकेतनों, नारी आश्रमों और महिला कल्याण हेतु चलाए गए संगठनों और संस्थाओं की सामयिक सच्चाई है। आज की न्याय व्यवस्था के संदर्भ में लेखक कुछ यू लिखते हैं, ''साधू और भगत की जमानत की अर्जी मंजूर की जाती है ओर मुकदमे अगली तारिख १६ अगस्त, २०२० लगाई जाती है।''[७] कही–कही समयामयिक परिस्थितियों सामाजिक मान्य मूल्यों को भी प्रभावित करती ळै परन्तु यह कठोर है, जीवन और समाज में मानव की जीजिविशा सबसे श्रेश्ठ है, इन्ही संदर्भों में व्यक्ति पितामह भीश्म बनना स्वीकार करता है, गृहलक्ष्मी के ये संदर्भ इन्ही बातों की ओर संकेत करते है, ''तुम्हें क्या लगता है, मैं पुराने जमाने की नारी बनकर, तुम्हारी दबेल बनकर रहूँ, यह मुझसे नही होगा।''[८] ससुर के सामने बहु का यह संवाद ससुर को मौन बना देता है, यह सामयिक है।

व्यक्ति समाज की सूक्ष्म इकाई है, यह अलग बात है कि व्यक्ति से मिलकर समाज की निर्माण होता है, यह बात साहित्य और समाज दोनों के लिए महत्त्वपूर्ण है परनतु व्यक्ति चाहे भले ही समाज का निर्माण और विकास करे उसे रहना ही समाज के नियमों के अनुरूप होना है। यह व्यक्ति की क्षमता होती है कि वह समाज की परिस्थितियों के अनुरूप अपने को अद्यतन करता चलता है। यह सामयिकता होती है, हरिषरण ने इस सामयिकता का खूब अपनाया भी और चित्रित भी किया है।

सामयिक युगबोध पैतृक सत्तात्मक परिवार की बुनियाद पर एक चोट है, आज समाज में पिछले समय की तुलना में तलाक की संख्या बहुत अधिक बढ़ गयी है जो गलत है। इसके लिए यह कहा जा सकता है कि नारी अपने अधिकारों को उपयोग करने लग गयी है जो सही है यदि वह कर्त्तव्य का पालन करे तो परन्तु ऐसा नही है। 'कुलदीपक' नाटक का उदाहरण यहाँ लिया जा सकता है। जिसमें पूरा परिवार बिखर जाता है और इसकी जिम्मेदारी कोई भी सदस्य नही लेता है। अत: सामयिक युगबोध हरिषरण वर्मा के साहित्य में खूब चित्रित हुआ है।

उपसंहार :

अस्तु, उपरोक्त विवेचन के पष्चात यह कहा जा सकता है कि हरिषरण वर्मा सामयिक परिस्थितियों के साहित्यकार हैं। उनकी रचनाओं में सामयिक युगबोध एक देषकाल और वातावरण के तत्व को पूरा करने वाला तत्व बन कर उभरा

है। जीवन और समाज की प्रत्येक परिस्थिति को हरिषरण वर्मा ने खूब खुले हाथ से चित्रित किया है। यहाँ यह भी कहा जा सकता है कि संस्कार हीनता आज की सामयिकता है जो आदमी को अर्ष तक लेकर आती है और उसके चरित्र को ध्वस्त कर देती है। इसलिए मनुश्य को आर्थिक सामाजिक सुरक्षा के लिए निरंतर कार्य करने चाहिए यह हमारे मूल्यों में निहित है। मंगलसूत्र, गृहलक्ष्मी, नारी उत्थान, लव जिहाद इसी प्रकार के नायक है जिनमें युगबोध के रूप में सामयिकता को देखा जा सकता है।

संदर्भ सूची :

१. मूल्य को जीवन, हुकमचंद राजपाल, पृ. ७२
२. मानवीय मूल्य, डॉ. कैलाष, पृ. २३
३. नारी उत्थान, डॉ. हरिषरण वर्मा, पृ. २९
४. वही, पृ. ३२
५. वही, पृ. ३७
६. गृहलक्ष्मी, डॉ. हरिषरण वर्मा, पृ. ३१
७. वही, पृ. ८१